28 जनवरी 2019 को कुंभ मेला, प्रयागराज में प्रभु प्रेमी संघ चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा आयोजित संस्कृति रक्षा सम्मेलन के अवसर पर माननीय अध्यक्ष का भाषण

———

1. मुझे आज कुंभ मेले के पावन अवसर पर प्रभु प्रेमी संघ चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा आयोजित संस्कृति रक्षा सम्मेलन में भाग लेने के लिए प्रयागराज आकर बहुत खुशी हो रही है।

2. देश की सांस्कृतिक अस्मिता को जीवन्त करने वाले एवं जन–जन में अद्‌भुत सांस्कृतिक चेतना का संचार करने वाले धर्मगुरूओं एवं सन्तों के सान्निध्य में आकर मुझे अत्यन्त हर्ष एवं उत्साह का अनुभव हो रहा है। यह सौभाग्य है कि प्रयाग की इस पावन सभ्यता एवं संस्कृति की पोषक भूमि पर यह समागम आयोजित किया जा रहा है।

3. परमपूज्य अवधेशानंद गिरि जी के संरक्षण में कार्यरत प्रभु प्रेमी संघ मानव जाति के आध्यात्मिक उत्थान एवं वैश्विक समुदाय की निःस्वार्थ सेवा के लिए समर्पित है। यह सेवा, सत्संग, शास्त्र, संयम, साधना एवं आत्म उत्थान के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति के आध्यात्मिक उत्थान का मार्ग प्रशस्त करता है। आज यह संस्था एक विशाल वट वृक्ष के रूप में देश–विदेश में फैल गई है एवं मानवता के संदेश को निरंतर फैला रही है। कुम्भ के समागम का भी यही उद्‌देश्य है।

4. इस वर्ष प्रयागराज में कुंभ मेले का आयोजन पूरी तैयारी और योजनाबद्ध तरीके से किया जा रहा है। जैसाकि हम सब जानते हैं कि किसी भी राष्ट्र की पहचान उसकी सभ्यता एवं संस्कृति से होती है। संस्कृति हमारी साझी सोच, मूल्यों, लक्ष्यों और परंपराओं का आइना होती है। हमारे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और अन्य कार्यकलापों में इसका प्रमुख स्थान होता है।

5. हमारी संस्कृति और जीवन में कुंभ मेले का आयोजन एक पवित्र और पावन अवसर होता है। आस्था, विश्वास, सौहार्द और संस्कृतियों के मिलन का पर्व है कुम्भ। कुम्भ सृष्टि में सभी संस्कृतियों का संगम है। कुम्भ आध्यात्मिक चेतना, मानवता का प्रवाह, प्रकृति एवं मानव जीवन का संयोजन, जीवन की गतिशीलता एवं ऊर्जा का स्रोत है। यह नदियों, वनों एवं आर्ष संस्कृति का स्व–प्रवाह है। यह आत्मप्रकाश का पर्व है।

6. यह समागम हमें इस बात का बोध कराता है कि सृष्टि–प्रकृति की विविधताओं में ऐक्य का भाव है, सभी में एक ही दिव्य चैतन्यता है। विविधता में अन्तर्निहित ऐक्य भाव ही सत्य है। वही हम सभी को जोड़ता है, हमें पूर्ण बनाता है। एकात्मकता का मूल सूत्र एवं स्रोत भारतीय सनातन परंपरा में ही निहित है।

7. संस्कृति का अर्थ है जीवन जीने की शैली या कला। भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन, समृद्ध एवं विशिष्ट संस्कृति है। हमारे देश में भाषा, बोली, धर्म, कला, संगीत, नृत्य, खानपान, पहनावा, ज्ञान–दर्शन आदि इतनी विविधताएं हैं

जितनी दुनिया के किसी देश में नहीं है। लेकिन इतनी विविधताओं के बीच भारतीयता का सूत्र हमें एक धागे में पिरोता है। हमारे समाज की सबसे महत्वपूर्ण और विशिष्ट पहचान विविधता में एकता है।

8. जब हम किसी भारतीय नागरिक की बात करते हैं तो उसका आशय एक विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान से होता है। भारत की संस्कृति, सांस्कृतिक विरासत एवं उसके दूरगामी प्रभाव, वसुधैव कुटुम्बकम, शांति, सहअस्तित्व, भाईचारा, समन्वय, विचार, ज्ञान–दर्शन, विविध परम्पराएं और उनकी स्वीकार्यता के प्रति संपूर्ण विश्व आदरभाव रखता है और नतमस्तक हो जाता है। सांस्कृतिक बहुलता एवं आध्यात्मिक उन्नति हमारी सभ्यता और संस्कृति के मूल में है। यह देश कई सदियों से सहिष्णुता, सह जीवंतता का उदाहरण रहा है। दुनिया में भिक्षुओं की सबसे प्राचीन रीति, संन्यासियों का वैदिक व्यवहार और धर्म जिसने विश्व को सहिष्णुता एवं सार्वभौमिक स्वीकृति, दोनों सिखाया है।

9. हमारी सदियों पुरानी संस्कृति मानव एकता एवं मानव कल्याण पर ही आधारित हैं। ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' हमारी मूलभूत अवधारणा है। हमारे दर्शन का प्रमुख सूत्र ही है ''एकोज्यहं बहुस्याम्'' यह सारा चराचर जगत परब्रह्म का ही अंश है। इसलिए शास्त्र हमें यह सिखलाते हैं कि **''क्षिति, जल, पावक, गगन समीरा, पंचतत्व मिल बना शरीरा।''** हम अपने कर्म, ज्ञान और आत्मा, तीनों से इन पंचमहाभूतों के मर्म को समझते हुए भारतीय पद्धति से जीवन जीते हैं और

यही हमारी विशेषता है। हमारे धर्मग्रन्थ, हमारी जीवन पद्धति, हमारा सब कुछ पर्यावरण एवं सृष्टि को सहेजने एवं सम्पूर्ण जगत के कल्याण के लिए है।

10. हालांकि सदियों से कुम्भ पर्व मनाया जाता रहा है परंतु कुम्भ को उसके वर्तमान स्वरूप में व्यवस्थित करने का श्रेय परमपूज्य आदि शंकराचार्य को जाता है। संपूर्ण भारत की उस समय की जनप्रचलित भाषा संस्कृत को माध्यम बनाकर आदि शंकराचार्य ने धर्म, अध्यात्म और दर्शन का प्रभावी संदेश दिया और भारत के उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम, समस्त भागों को सांस्कृतिक दृष्टि से एक सूत्र में पिरो दिया और चारों पवित्र स्थानों प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में कुम्भ मनाने के लिए संपूर्ण भारत से साधु, संतों एवं गृहस्थों को एकत्र होने एवं धर्म, अध्यात्म एवं सामाजिक व्यवस्था पर विचार–विमर्श हेतु मंच प्रदान किया। शिक्षित वर्ग एवं बुद्धिजीवियों को उन्होंने अपने दर्शन के माध्यम से प्रभावित कर एकत्रित किया और आम आदमी के लिए उन्होंने सरल भाषा में अपनी रचनाओं, भाष्यों और तीर्थयात्राओं के माध्यम से देश में सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, धार्मिक एवं सामाजिक एकता का सूत्रपात किया।

11. कुंभ मेले के दौरान अखाड़े भी दिखाई देते हैं। 'अखाड़ा' शब्द अखंड शब्द का बिगड़ा हुआ रूप है। आदि गुरु शंकराचार्य ने 'सनातन धर्म' की रक्षा के लिए देश भर के साधु–संन्यासियों के संगठनों को एक मंच पर एकत्रित किया एवं उन्हें दसनामी सम्प्रदाय के रूप में संगठित किया। उन्हें तीर्थ, आश्रम, वन,

अरण्य, गिरि, पर्वत, सागर, सरस्वती, भारती और पुरी का नाम दिया और उन सभी साधु–संन्यासियों को आम जनता के नैतिक उत्थान के लिए प्रेरित कर राष्ट्र के उत्थान की दिशा में कार्य करने के लिए कहा गया।

12. हमारी संस्कृति विश्व की सर्वश्रेष्ठ संस्कृतियों में से एक है। हमने सदियों से विश्व का नेतृत्व किया है। इसके पीछे हमारे ऋषियों, मनीषियों का तप, त्याग एवं अध्यात्म समाहित है। हमने विश्व को जीवन की सत्यता से अवगत कराया है। उन चीजों की महत्ता से अवगत कराया है जो अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह कुम्भ प्रकृति के पूजन का भी पर्व है। इसी को दृष्टिगत रखते हुए नदियों के तट पर कुम्भ का आयोजन होता है।

13. ऐसे विचार कुम्भ में सत्य, प्रेम, सुख–शांति की खोज, अध्यात्म की ओर झुकाव, मोक्ष एवं निर्वाण की चर्चा इत्यादि पर इसी प्रकार निरंतर होते रहनी चाहिए। विचार–विमर्श, चिंतन एवं संस्कृति संरक्षण की यह परम्परा निरंतर चलती रहे, इसके लिए ऐसे कार्यक्रम सतत् आयोजित होते रहना अत्यन्त प्रासंगिक है और समीचीन है। जैसा कि शास्त्रों में वर्णित हैः–

''अस्थिरं जीवितं लोके ह्यस्थिरे धनयौवने।
अस्थिराः पुत्रदाराश्च धर्मः कीर्तिर्द्वयं स्थिरम् ॥''

(इस अस्थिर जीवन/संसार में धन, यौवन, पुत्र–पत्नी इत्यादि सब अस्थिर है। केवल धर्म और कीर्ति, ये दो ही बातें स्थिर हैं।)

14. भारत ने कभी भी दूसरे देश पर आक्रमण नहीं किया है और न ही उसकी भूमि जीती है बल्कि अपनी उच्च संस्कृति, परंपराओं, आदर्शों से सुदूर देशों में लोगों के हृदय जीते हैं। आज भी भारत की यह सांस्कृतिक विरासत दुनिया के अनेक देशों जैसे मॉरीशस, जापान, वियतनाम, फिजी, सूरीनाम, मालदीव में न केवल अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं बल्कि सशक्त रूप से पुष्पित और पल्लवित हो रहे हैं। यह है हमारी संस्कृति और उसकी सशक्तता।

15. लेकिन आज के बदलते समय में जहां technology का प्रभाव जीवन के हर क्षेत्र पर पड़ा है वहां हमें हमारी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित व सुरक्षित करने और विशेषकर युवा पीढ़ी में संस्कारों के प्रवाह को सुदृढ़ करने के लिए प्रयास करने चाहिए ताकि बदलते समय एवं परिवेश के अनुरूप हम अपनी सांस्कृतिक विचारधारा और आधुनिक technology के साथ समन्वय बनाते हुए मानव मात्र के कल्याण के लिए निरंतर प्रयत्नशील और कर्तव्यशील रहें।

16. हमारी सभ्यता और संस्कृति में सभी जीवों के कल्याण पर बल दिया गया है। जैसा कि शास्त्रों में वर्णित है:–

''ऊँ सर्वे भवन्तु सुखिनः। सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु। मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत्।।
ऊँ शांतिः शांतिः शांतिः।।''

इसका हिन्दी भावार्थ है कि सभी सुखी होंवे, सभी रोगमुक्त रहें, सभी का जीवन मंगलमय बने और कोई भी दुःख का भागी न बने। हे ईश्वर! हमें ऐसा वर दो।

17. प्रयाग की पावन नगरी में प्रभु प्रेमी संघ चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम का उद्देश्य बहुत ही पावन एवं दूरगामी है। अपनी सदियों पुरानी सांस्कृतिक उत्कृष्टता को पुनःस्थापित करना, उन शाश्वत विचारों का जन–जन में प्रचार ही इस आयोजन का उद्देश्य है।

18. प्रयागराज में पावन अर्ध कुंभ मेले के आयोजन के अवसर पर मैं सभी भक्तजनों तथा प्रभु प्रेमी संघ चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा प्रयागराज नगर में कुंभ मेले के साथ आयोजित संस्कृति रक्षा सम्मेलन से जुड़े सभी अनुयायियों एवं समस्त देशवासियों को अपनी शुभकामनाएं देती हूं।

धन्यवाद।

————